

ट्रैक्टरों का घटक

- **क्लच** एक डिवाइस है, जिसका उपयोग ट्रांसमिशन गियर और ड्राइव पहियों से ट्रैक्टर इंजन को जोड़ने और डिस्कनेक्ट करने के लिए किया जाता है।
- **एक ट्रैक्टर की पावर ट्रांसमिशन प्रणाली:** ट्रांसमिशन एक गति को कम करने वाला तंत्र है,
- कई गियर से लैस। इसे गियर और गिफ्ट्स का सीक्वेंस कहा जा सकता है, जिसके जरिए इंजन की पावर ट्रैक्टर के पहियों में फैलती है।
- **ट्रांसमिशन गियर:** एक ट्रैक्टर उच्च गति से चलता है, लेकिन ट्रैक्टर के पीछे के पहिए में कम गति और उच्च टॉर्क पर पावर की आवश्यकता होती है।
- **अंतर इकाई** गियर की एक विशेष व्यवस्था के लिए ट्रैक्टर के पीछे के पहियों में से एक को धीमी या दूसरे की तुलना में तेजी से घुमाने की अनुमति है।
- **अंतरताला:** अंतर ताला ट्रैक्टर के दोनों आधे धुरों में शामिल होने के लिए एक उपकरण है ताकि भले ही एक पहिया कम प्रतिरोध है, ट्रैक्टर कीचड़ आदि से बाहर आता है के रूप में दोनों पहियों एक ही गति के साथ कदम और समान कर्षण लागू होते हैं।
- **फाइनल ड्राइव** डिफरेंशियल और ड्राइव व्हील्स के बीच पावर ट्रेनों में गियर रिडक्शन यूनिट है। एक ट्रैक्टर के सामने के पहियों के कोणीय आंदोलन को नियंत्रित करने वाली प्रणाली को स्टीयरिंग कहा जाता है। यह हाइड्रोलिक साधनों द्वारा घुड़सवार कार्यान्वयन या अर्ध घुड़सवार उपकरण को बढ़ाने, पकड़ने या कम करने के लिए ट्रैक्टर में एक तंत्र है।
- **ट्रैक्टर** (26.1 किलोवाट) का औसत कमांड क्षेत्र लगभग पंद्रह हेक्टेयर है। खेत पर ट्रैक्टर से बिजली की उपलब्धता की गणना के लिए, प्रति ट्रैक्टर 26.1 किलोवाट बिजली का भारित औसत माना जाता है।
- **हाइड्रोलिक नियंत्रण प्रणाली:** यह एक ट्रैक्टर में एक तंत्र को बढ़ाने के लिए, पकड़ या हाइड्रोलिक साधनों से घुड़सवार लागू या अर्द्ध घुड़सवार उपकरण कम है।

पावर टिलर





- साथ ही हैंड ट्रैक्टर या वॉकिंग टाइप ट्रैक्टर भी कहा।
- खेत पर बिजली टिलर से बिजली की उपलब्धता की गणना के लिए 7 किलोवाट प्रति यूनिट का भारित औसत माना जाता है। एक पावर टिलर (7.46 किलोवाट) का औसत कमांड क्षेत्र पांच हेक्टेयर है, जहां बैलों की एक जोड़ी केवल दो हेक्टेयर के बारे में कमांड कर सकती है।
- 1920: पावर टिलर अवधारणा दुनिया में आते हैं।
- 1947: जापान में डिजाइन किया गया पहला पावर टिलर।
- 1950-65: बिजली टिलर उत्पादन में वृद्धि हुई।
- 1963: पावर टिलर पहली बार भारत में पेश किया।
- जापान पावर टिलर का इस्तेमाल करने वाला पहला देश है।
- टायर का दबाव: 1.1 से 1.4 किलो/

भारत में प्रसिद्ध पावर टिलर

1. सातो
2. कृषि
3. कुबोता
4. यामर
5. मित्सुबिशी
6. इस्की (केरोसिन इंजन)

पावर टिलर के घटक:

- **मुख्य क्लच:** पावर वी-बेल्ट-चरखी व्यवस्था के माध्यम से इंजन से मुख्य क्लच तक जाता है।
- **ट्रांसमिशन गियर:** ट्रांसमिशन गियर में गियर, शाफ्ट और बीयरिंग शामिल हैं। ट्रांसमिशन गियर इंजन की गति को कम करते हैं और पहियों पर टॉर्क बढ़ाते हैं।
- **व्हील:** दो से चार प्लाई वायवीय टायरों का उपयोग किया जाता है।
- **रोटरी यूनिट:** पावर टिलर के पास फील्ड ऑपरेशन के लिए रोटरी यूनिट है। रोटरी टीनों का उपयोग रोटरी इकाई में मिट्टी काटने और पल्वरिंग उद्देश्यों के लिए किया जाता है।